RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-02
February -2019
ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

भारत में जनसंख्या विस्फोट खाद्य सुरक्षा के लिए खतरा

जयप्रकाश जायसवाल
शोधार्थी, भूगोल विभाग, राधे हरि राजकीय पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, काशीपुर उद्यमसिंह नगर (उत्तराखंड) कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 20 February 2019

Keywords
जनसंख्या
राष्ट्र का स्वास्थ्य
ग्रामीण
शहरी

ABSTRACT

जनसंख्या मानव भूगोल का मूल तत्व है। यह प्रकृति में गतिशील है। जनसंख्या के गतिशील चरित्र के कारण यह दिन-प्रति खतरनाक स्थिति तक बढ़ रहा है। दूसरी ओर खाद्य उत्पादन सीमित है। जो लोगों के आहार जरूरतों एवं खाद्य प्राथमिकताओं को पूरा नहीं कर पा रही है। इसी कारण जनसंख्या की बढ़ती हुई दर खाद्यान्न संकट की ओर ले जाती है। यह किसी भी देश के आर्थिक विकास को क्षति पहुँचा सकती है। किसी भी राष्ट्र की समृद्धि एवं खुशहाली के लिए खाद्य सुरक्षा मेरूदंड है और किसी राष्ट्र का स्वास्थ्य प्रत्यक्षतः इससे जुड़ा हुआ है। इसलिए इस शोध-पत्र का उद्देश्य भारत में तेजी से बढ़ती जनसंख्या के कारणों का विश्लेषण करना और खाद्य सुरक्षा पर इसके प्रभावों की चर्चा करना है। इसके अतिरिक्त यह प्रयास है कि जनसंख्या को नियंत्रित करके खाद्य सुरक्षा के लिए उपयोगी उपायों को प्रस्तुत करना ताकि सभी लोगों को प्रत्येक समय ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में सस्ती कीमत पर स्वस्थ जीवन-यापन करने के लिए पर्याप्त सुरक्षित और पौष्टिक भोजन प्राप्त हो सके।

भूमिका

जनसंख्या एक विशेष समय में एक विशेष क्षेत्र में रहने वाले लोगों की संख्या को दर्शाती हैं इसलिए समय बीतने के साथ ही लोगों की संख्या में परिवर्तन होता है। जनसंख्या विस्फोट शब्द से पता चलता है कि मानव आबादी की तीव्र वृद्धि जिसमें बहुत कम समय में जनसंख्या का आकार दोगुनी हो गयी और इसके वृद्धि दर में तेजी आ गई। यह मुख्य रूप से बच्चों की मृत्युदर में गिरावट और जीवन प्रत्याशा में वृद्धि जैसे कारकों के कारण जनसंख्या के आकार में तीव्र के कारण हुई।

वर्ल्ड डेवलपमेंट रिपोर्ट 1986 में परिभाषित खाद्य सुरक्षा से तात्पर्य प्रत्येक समय प्रत्येक लोगों को एक सक्रिय और स्वस्थ जीवन के लिए पर्याप्त भोजन उपलब्ध कराने की स्थिति है। खाद्य एवं कृषि संगठन (1986) के अनुसार खाद्य सुरक्षा से तात्पर्य सभी लोगों को उनकी जरूरत के अनुसार मूलभूत खाद्य तक शारीरिक और आर्थिक पहुँच से है।

आर्थिक विकास से तात्पर्य जनसंख्या और संसाधन के बीच सकारात्मक संपर्क से है लेकिन जनसंख्या विस्फोट से संसाधनों की उपलब्धता में कमी आयी है और खाद्य सुरक्षा के लिए खतरा पैदा हो गया हैं इसका परिणाम स्वरूप चिरकालिक और व्यापक स्तर पर बड़ी संख्या में लोग भूख के शिकार होते है।

उद्देश्य

1. जनसंख्या विस्फोट के कारणों की पहचान करना।
2. जनसंख्या विस्फोट के कारण खाद्य सुरक्षा पर प्रभाव की चर्चा एवं विश्लेषण करना।
3. इन चुनौतियों से निपटने के लिए रणनीतियों की चर्चा करना।

विधि तन्त्र एवं आँकड़े

प्रस्तुत शोध-पत्र में भारत सरकार के जनगणना विभाग द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट एवं कृषि एवं कल्याण मंत्रालय द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट के आँकड़ों का विश्लेषण किया गया हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, आर्टिकल एवं रिपोर्ट के आँकड़ों को विश्लेषित किया गया है।

जनसंख्या की वर्तमान स्थिति

भारत की आबादी अभी भी खतरनाक दर से बढ़ रही है। जिस दर से भारत की आबादी बढ़ रही है वह घबराहट पैदा करने वाली है। जहाँ 1981 में भारत की

RRIJM 2015, All Rights Reserved

जनसंख्या 683 मिलियन थी वह 2011 के आँकड़ों के अनुसार बढ़कर 1210 मिलयन हो गई। एक अनुमान के अनुसार यदि वर्तमान प्रवृत्ति जारी रही तो 2025 तक जनसंख्या 1400 मिलियन हो जायेगी और उस वर्ष भारत विश्व में प्रथम स्थान रखने वाले चीन को पार कर सकता है। वर्तमान में भारत की जनसंख्या वृद्धि दर 17.64% है।

भारत की जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर

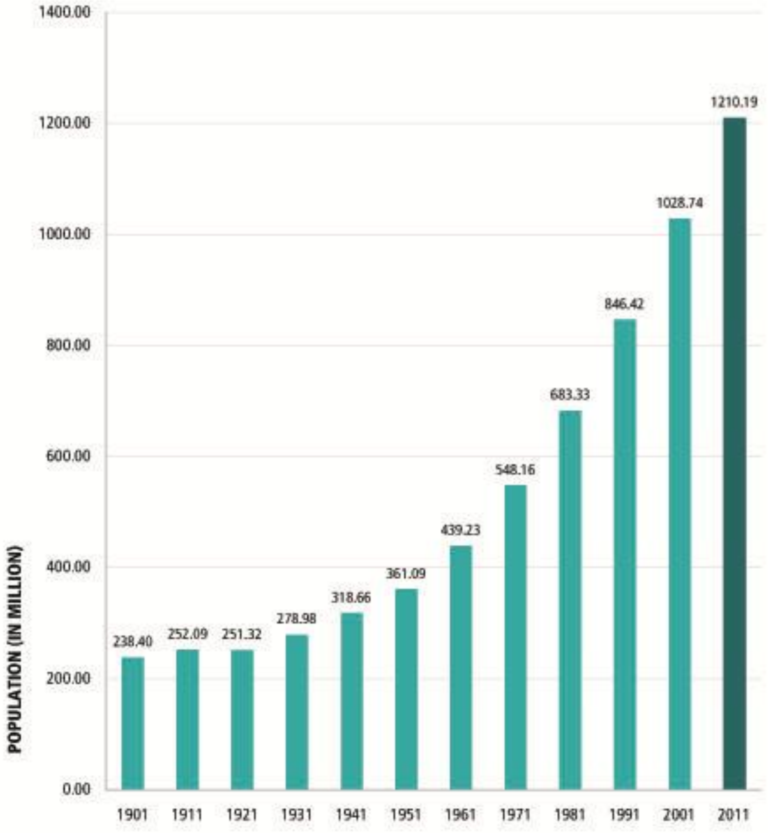

Source : Census of India, 2011

जनसंख्या के तीव्र वृद्धि कारण

1. जनसंख्या की उच्च जन्म दरं एवं निम्न मृत्यु दर।
2. विवाह की कम उम्र – 65% से अधिक लड़कियाँ 15 वर्ष की आयु से पहले शादी कर लेती है जबकि वे सामाजिक और भावनात्मक रूप से इसके लिए तैयार नहीं रहती है।
3. उच्च निरक्षरता – समग्र रूप से महिला साक्षरता कम है परिवार नियोजन का महिला शिक्षा उनकी प्रजनन क्षमता एवं शिशु मृत्यु दर से सीधा संबंध है।
4. परिवार नियोजन के प्रति धार्मिक दृष्टिकोण।
5. संयुक्त परिवार प्रणाली एवं युवा दम्पत्तियों में जिम्मेदारी की कमी।
6. अप्रवासन की उच्च दर एवं गरीबी।

जनसंख्या विस्फोट एवं खाद्य सुरक्षा के मुद्दे का विकास

राबर्ट माल्थस द्वारा सर्वप्रथम अपने खाद्य सुरक्षा वृद्धि के सिद्धान्त में जनसंख्या विस्फोट एवं खाद्य सुरक्षा के मुद्दे को उठाया गया भोजन, पोषण, स्वास्थ्य सुविधा और शिक्षा के उपलब्धता के कारण प्रति व्यक्ति आय बढ़ेगी और जीवन प्रत्याशा भी बढ़ जायेगी और मृत्यु दर तेजी से घटेगी क्योंकि चिकित्सा की बेहतर सुविधा उपलब्ध है। उन्होंने कहा कि खाद्य उत्पादन की वृद्धि गणितीय (जैसे 1, 2, 3, 4, 5, 6) होती है। वहीं जनसंख्या वृद्धि ज्यामितिय (2, 4, 8) होती है। इसलिए खाद्य उत्पादन और जनसंख्या के बीच अन्तर के कारण जीवन निर्वाह साधनों पर दबाव बढ़ेगा क्योंकि खाद्य उत्पादन में वृद्धि जनसंख्या में वृद्धि के साथ तालमेल नहीं रख सकती। परिणामस्वरूप जनसंख्या विस्फोट खाद्य सुरक्षा के लिए खतरा पैदा करेगा।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

खाद्य सुरक्षा का आधार

खाद्य सुरक्षा से तात्पर्य खाद्य उत्पादन और खाद्य उपलब्धता के साथ भोजन तक आर्थिक पहुँच है यह तीन स्तंभों पर आधारित है –

1. **खाद्य उपलब्धता** – यह उत्पादन, वितरण और निरंतर आधार पर विनियम के माध्यम से खाद्य की आपूर्ति को संदर्भित करता है।
2. **खाद्य तक पहुँच** – पोषक आहार के लिए उपयुक्त खाद्य पदार्थ प्राप्त करने के लिए पर्याप्त संसाधन होने चाहिए।
3. **खाद्य उपयोग** – आधारभूत पोषाहार ओर देखभाल तथा पर्याप्त जल एवं स्वच्छता के ज्ञान के आधार पर उपयुक्त प्रयोग खाद्य सुरक्षा खाद्य उपयोग को प्रभावित करती है।

खाद्य सुरक्षा के चरण

खाद्य की पर्याप्त उपलब्धता खाद्य सुरक्षा के लिए अनिवार्य है और यह खाद्य उत्पादन पर निर्भर है। यह कितना उत्पादन होता है और कितना उपभोग इससे हमें घाटे/कमी और अधिशेष की पहचान करने में मदद मिलती है तथा उपभोग किये जाने वाले और पोषण की स्थिति के बारे में जानने में भी मदद करता है।

- **प्रथम चरण :** प्राचीन भारत में अनाज उत्पादन पर्याप्त था और उस समय लगभग सभी नागरिकों को संतुलित पोषण आहार उपलब्ध था। अनाज में अनिश्चित उत्पादन भारत में ब्रिटिश काल में कृषि के व्यवसायीकरण के बाद शुरू हुआ। इस अवधि में अकाल आम बात हो गयी और खाद्य असुरक्षा उच्च स्तर पर थी। इसलिए स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत को अनाज की गंभीर कमी का सामना करना पड़ा।
- **द्वितीय चरण :** 1950 से लेकर 1960 के दशक में खाद्यान्न की घरेलू मांग और आपूर्ति में गंभीर असंतुलन के लक्षण दिखाई दिया। खाद्यान्न के आपात में घरेलू उपलब्धता का लगभग 20% की वृद्धि करना आवश्यक था परंतु हरित क्रान्ति के बाद यह स्थिति टल गई और 1980 के दशक में देश अनाज की उपलब्धता में आत्मनिर्भरता प्राप्त की तथा असुरक्षा में कमी आयी और भारत अनाज के उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त की जिससे खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हो सका। भारतीय खाद्य निगम ने 70 मिलियन टन अनाज को बफर स्टॉक के रूप में संचित किया है किंतु इस विशाल भंडार के बावजूद खाद्य असुरक्षा आपूर्ति पक्ष से नहीं बल्कि मांग पक्ष से है।
- **तृतीय चरण :** भारत में खाद्य उत्पादन के तीसरे चरण का प्रतिनिधित्व 1990 के दशक से आर्थिक सुधार के बाद हुआ यद्यपि यह दौर स्थूल आर्थिक सुधार एवं संरचनात्मक समायोजन का था किंतु खाद्य अर्थव्यवस्था पर इन सुधारों का नकारात्मक प्रभाव पड़ा। खाद्यान्न उत्पादन की विकास दर 1.7% प्रतिवर्ष थी जबकि जनसंख्या वृद्धि 1.9% प्रतिवर्ष थी इसलिए खाद्य उत्पादन वृद्धि के साथ ताल-मेल नहीं रख सका। मुद्रास्फीति के कारण अनाज की कीमतों में 10% की वृद्धि हुई। परिणामस्वरूप गरीबी और असमानता में वृद्धि हुई। इसलिए इस अवधि में खाद्यान्न बाजार में सार्वजनिक हस्तक्षेप बहुत महत्वपूर्ण हो गया और 1990 के बाद सरकार द्वारा खाद्यान्न खरीद में 10% की बढ़ोत्तरी करके 15% कर दी गई।

खाद्य अनाज के उत्पादन में प्रवृत्ति

वर्ष 1950 के दशक में वार्षिक खाद्य अनाज का उत्पादन मात्र 50 मिलियन था जो 2018-19 में रिकार्ड 283-37 मिलियन पर पहुँच गया जिसका मुख्य कारण चावल और गेहूँ के उत्पादन में भारी उछाल था। कुल मिलाकर के धान सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाला था और उत्पादन 1950-51 में 20 मिलियन था वहीं 2016-17 के आँकड़ों में 110.15 मिलियन पहुँच गयी इसके बाद सबसे अच्छा प्रदर्शन गेहूँ का रहा जिसका 1950-51 में उत्पादन मात्र 6.46 मिलियन टन था वहीं 2016-17 के अंतिम आँकड़ों के अनुसार यह 98.38 मिलियन टन हो गया। खाद्यान्न की कुल उपलब्धता उसके उत्पादन और वितरण पर

निर्भर है। भारत का खाद्यान्न आयात दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है क्योंकि हरित क्रान्ति के बाद भारत में खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर हो गया है। लेकिन भारत में खाद्य सुरक्षा और खाद्य उत्पादन से जुड़ी कई समस्यायें है क्योंकि भोजन की माँग में वृद्धि और नगरीय क्षेत्रों के विकास गतिविधियों के लिए भूमि की माँग बढ़ी है।

भारत में खाद्य अनाज के उत्पादन की प्रवृत्ति

(धान, गेहूँ, मोटा अनाज, दाल)

(मिलियन टन)

वर्ष	उत्पादन
1950-51	50.8
1960-61	82
1070-71	108.4
1980-81	129.6
1990-91	176.4
2000-01	252
2012-13	257.13
2013-14	265.04
2014-15	252.02
2015-16	251.57
2016-17	275.68

स्रोत : कृषि एवं कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार

सार्वजनिक वितरण प्रणाली और खाद्यान्नों की चोरी

शहरी अभाव वाले क्षेत्रों में अनाज के वितरण पर केन्द्रित सार्वजनिक वितरण प्रणाली 1960 के दशक की संकटपूर्ण खाद्य कमी के कारण पैदा हुई। गरीबों की ओर सार्वजनिक वितरण प्रणाली का ध्यान सुनिश्चित करने के लिए तथा अनाज की चोरी और खुले बाजार में बेचने को रोकने के लिए एक संशोधित सार्वजनिक वितरण प्रणाली जून 1992 से शुरू की गई। लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली 1997 से शुरू की गई जिसमें गरीब परिवारों (बी.पी.एल.) और गरीबी स्तर से ऊपर (ए.पी.एल.) के परिवारों तथा गरीबों में गरीब के लिए सब्सिडी युक्त खाद्यान्न वितरण की परिकल्पना की गई।

खाद्य सुरक्षा पर जनसंख्या विस्फोट का प्रभाव

भारत में स्वतन्त्रता के बाद जनसंख्या वृद्धि कृषि से ज्यादा हो गई। खाद्य और जनसंख्या के बीच संतुलन बनाये रखने के लिए वार्षिक कृषि विकास 4.5 से अधिक और आर्थिक विकास (जीडीपी) 7% से अधिक होनी चाहिए। वर्तमान में कृषि विकास दर 2.7% है। जनसंख्या में तीव्र वृद्धि के प्रभाव से स्रोत से औसत आकार 1.5 हेक्टेयर तक कम हो गया है। जिससे कृषि में तकनीक और मशीनों का प्रयोग सीमित हुआ है तथा इससे कृषि उत्पान पर विपरीत प्रभाव पड़ता है और इसके कारण प्रतिव्यक्ति भोजन की उपलब्धता कम हो रही है। वर्ष 1991 में खाद्यान्न की प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष उपलब्धता 186.2 कि.ग्रा. थी वहीं 2016 में यह कम होकर 177.7 कि.ग्रा. हो गई है। यह ऐतिहासिक रूप ब्रिटिश काल की याद दिलाता है। जिसमें खाद्यान्न उपलब्धता इसी तरह थी। आँकड़े दर्शाते है कि देश में अपने ही लोगों को खिलाने के लिए पर्याप्त मात्रा में खाद्यान्न उपलब्ध नहीं है। भारत में दुनिया के 270 मिलियन भूखे लोग रहते है जो विश्व में सबसे अधिक है। भारत का स्थान आक्सफैम खाद्य उपलब्धता सूचकांक में 97वां है वहीं वैश्विक भूखमरी सूचकांक में 103वां स्थान है।

अनाज की प्रति व्यक्ति उपलब्धता (प्रति व्यक्ति प्रतिदिन ग्राम में)

वर्ष	मोटा अनाज	दाल	कुल
1950-51	334.2	60.7	394.9
1960-61	399.7	69	468.7
1970-71	414.6	51.2	465.8
1980-81	417.3	37.5	454.8
1990-91	468.5	41.6	510.1
2000-01	366.2	30	416.2
2011-12	390	31.5	422
2014	442.9	46.4	389.3

RRIJM 2015, All Rights Reserved

2015	421.4	43.8	465.1
2016	443.7	43	486.1
2017	465	52.9	518.1

स्रोत : कृषि एवं कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार

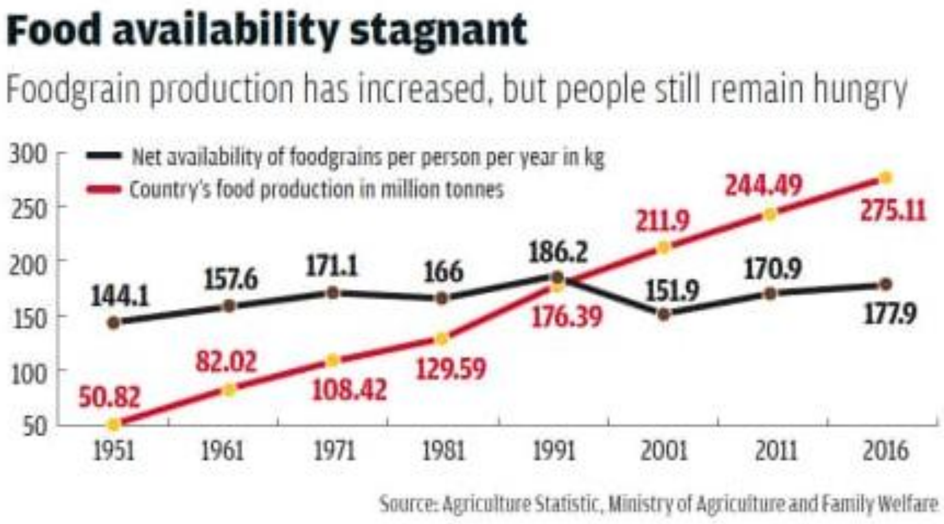

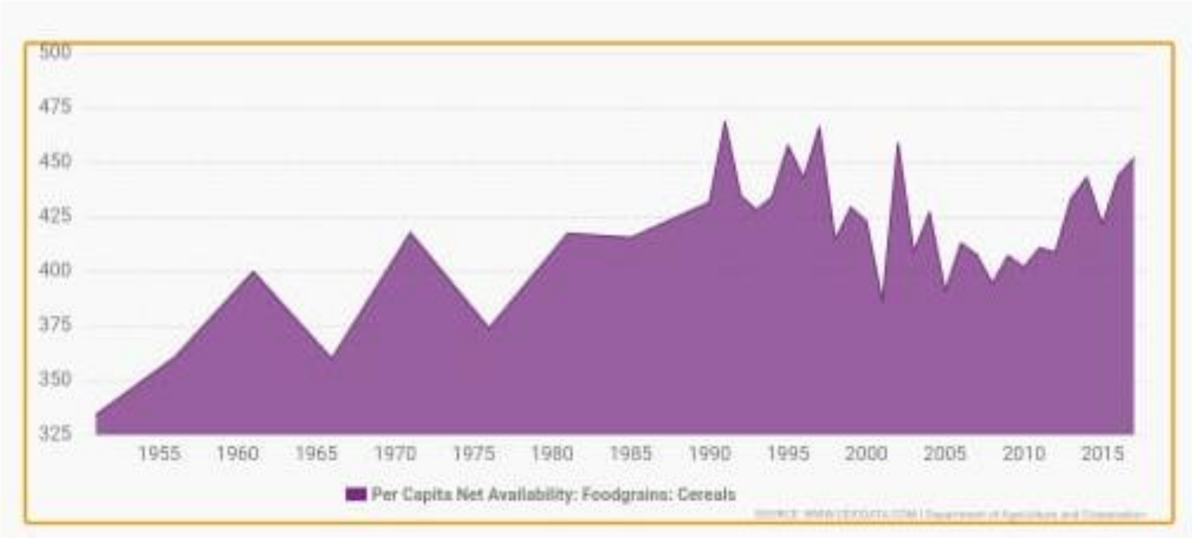

भारत में प्रति व्यक्ति दालों की शुद्ध उपलब्धता

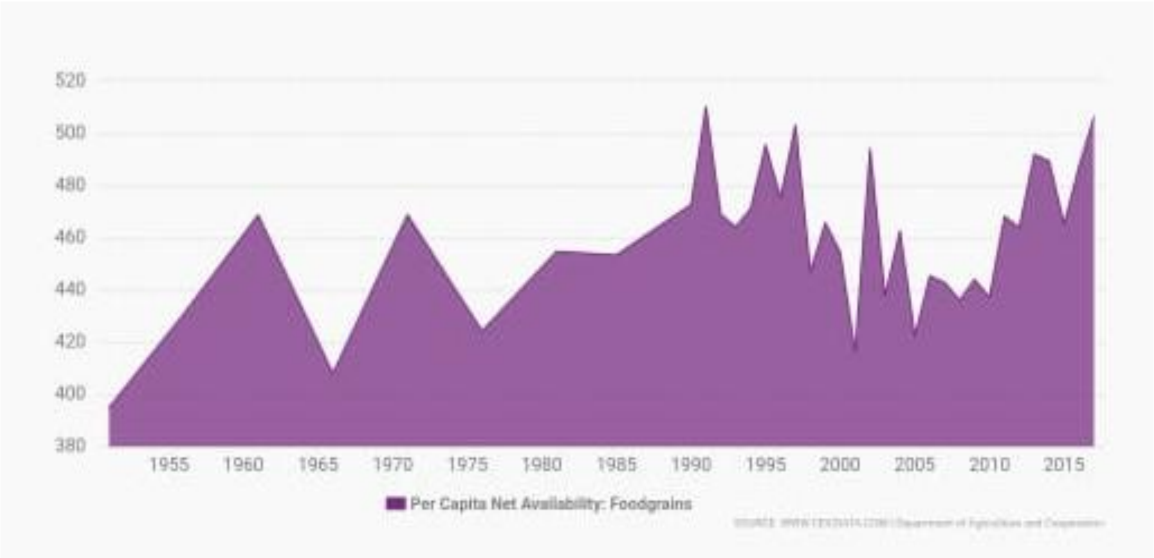

भारत में प्रति व्यक्ति मोटे अनाजों की शुद्ध उपलब्धता

2018 के आर्थिक सर्वेक्षण में कहा गया है कि स्थानों की निबल उपलब्धता 487 ग्राम प्रति व्यक्ति प्रतिदिन है। जब 1961 में भी अनाज की उपलब्धता 468.7 ग्राम थी जबकि 1971 में यह 466.8 ग्राम थी जबकि 1981 में यह कम होकर 454.8 ग्राम प्रति व्यक्ति प्रतिदिन हो गया। वहीं 1991 में सबसे अधिक 510 ग्राम उपलब्धता थी। वहीं खाद्य सुरक्षा में पोषक आहार की बात की जाए तो 195 मिलियन लोग कुपोषण के शिकार है। जिसमें लगभग 47 मिलियन बच्चे अथवा 10 में से 4 बच्चे अपनी पूर्ण मानव क्षमता प्राप्त नहीं कर पाते है इसका कारण कुपोषण हैं। आज खाद्य सुरक्षा प्रणाली पतन के करीब है। बफर स्टॉक और सार्वजनिक वितरण प्रणाली के लिए 25 मिलियन टन की जरूरत है। जबकि इसमें 60 मिलियन टन भंडारित किया गया है। इसका एक बड़ा भाग उचित तरीके से भंडारित नहीं है जो मानव के उपभोग हो सके। सार्वजनिक वितरण प्रणाली की स्थिति बहुत ही खराब हो चुकी है क्योंकि खाद्यान्न का एक बड़ा भाग सीधे बाजार में बेच दिया जाता है और गरीब तथा कथित खाद्यान्न का आर्थिक मूल्य वहन नहीं कर पायेगा। इन सभी कमियों को देखते हुए खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय ने एक नई योजना सार्वजनिक वितरण प्रणाली का एकीकृत प्रबंधन लागू की है। जिसके माध्यम से राशन कार्डो की राष्ट्रव्यापी पोर्टेबिलिटी का कार्यान्वयन करके एक राष्ट्र एक राशन कार्ड परियोजना को लागू करने में सहायता मिलेगा।

चुनौती से निपटने के उपाय

खाद्य सुरक्षा संपोषणीय विकास से जुड़ा हुआ जटिल मुद्दा है। जो स्वास्थ्य और संपोषणीय आर्थिक विकास से अर्न्तसम्बन्धित है। इसलिए जनसंख्या विस्फोट और खाद्य सुरक्षा की समस्याओं के समाधान के लिए निम्नलिखित कदम उठाने की जरूरत है –

1. विवाह की आयु में देरी को प्रोत्साहित करना।
2. सख्ती से दो बच्चों की नीति को लागू करना।
3. एक सक्षम सार्वजनिक वितरण प्रणाली का कार्यान्वयन।
4. कृषि का विविधिकरण को प्रोत्साहित करना।
5. घेरलू कृषि उत्पादन को बढ़ावा देना जिससे आबादी की जरूरतें पूरी हो और प्रमुख वर्गों में पोषकता हासिल हो सके।
6. खाद्य पदार्थों के न्यूनतम मूल्य समर्थन को तार्किक बनाना ओर उचित भंडारण को बढ़ावा देना।
7. नगरीय और औद्योगिक अतिक्रमण को रोकना।
8. कृषि रोजगार स्तर को बनाये रखने के लिए विश्व व्यापार संगठन के नियमों को तार्किक बनाना।
9. किसी भी देश में खाद्य सुरक्षा प्रणाली को प्राकृतिक आपदाओं का सामना करने के लिए मजबूत करना।
10. राज्य सरकारों को केन्द्र द्वारा खाद्यान्न आपूर्ति में कमी के मामले में कोष उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

सरकार द्वारा उठाये गये कदम

राष्ट्रीय राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम 2013 – इस कानून का लक्ष्य है कि भारत के 1.2 अरब लोगों में से दो तिहाई लोगों को भारी सब्सिडी युक्त 5 कि.ग्रा. अनाज उपलब्ध कराया जाए जिसमें 2 रुपये किलो चावल और 3 रुपये किलो गेहूँ तथा 1 रुपये किलो मोटा अनाज होगा। शहरी क्षेत्रों में इस योजना के तहत कुल घर के 50% को शामिल किया जायेगा जिसमें से 28% को प्राथमिकता सूची में रखा जायेगा।

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना

किसानों के प्रयासों को मजबूत करके कृषि व्यापार उद्यमशीलता को बढ़ावा देकर खेती को लाभकारी आर्थिक गतिविधि बनाना इसका मुख्य जोर कृषि उद्यमशीलता और नवाचारों को बढ़ावा देना है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संदर्भ ग्रंथ-सूची

1. चन्द्रा, आर.सी., जनसंख्या भूगोल, कल्याणी प्रकाशक, दिल्ली
2. कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय की रिपोर्ट, 2017.
3. खुल्लर, डी.आर., भारत का समग्र भूगोल, कल्याणी प्रकाशक।
4. भारत सरकार की जनगणना रिपोर्ट।
5. सिद्धार्था, के. ओर मुखर्जी, एस., भूगोल की आधुनिक शब्दकोष।
6. राय, पी.के. आर्थिक भूगोल, संसाधनों का एक केस अध्ययन।
7. खाद्य एवं कृषि अनुसंधान संस्थान, (अन्तर्राष्ट्रीय कृषि आउटलुक स्टाफ रिपोर्ट)।

RRIJM 2015, All Rights Reserved